BA III I Paper

PAGE NO.
DATE: / /200

आर्थिक विकास

डॉ० सरस्वती

आर्थिक विकास का अर्थ शुद्ध राष्ट्रीय आय में दीर्घकालीन वृद्धि को सूचित करने वाली प्रक्रिया से है सरल शब्दो में - राष्ट्रीय आय व प्रति व्यक्ति आय में दीर्घकालीन व सतत वृद्धि होना ही आर्थिक विकास है।

आर्थिक विकास आर्थिक जगत की सर्वाधिक महत्वपूर्ण धारणा (समस्या) है। और इस वर्तमान शताब्दी में आर्थिक चिन्तन का केन्द्र बिन्दु माना जाता है।

Meier and Boldwin
मायर एवं बॉल्डविन

"राष्ट्रो की निर्धनता का अध्ययन राष्ट्रो के धन के अध्ययन से भी महत्वपूर्ण है।"

यद्यपि आर्थिक विकास का प्रश्न सभी प्रकार के देशो के लिए महत्व रखता है किन्तु विकास शील देशो के लिए इसका विशेष महत्व है। क्योंकि आर्थिक विकास के द्वारा वे अपनी सामान्य दरिद्रता एवं निर्धनता से छुटकारा पा सकते है।

"किसी एक स्थान की दरिद्रता प्रत्येक अन्य स्थान की समृद्धि के लिए खतरा है।"

अर्थात आज का विश्व दो भागो मे बँट गया है अमीरी व गरीबी अर्थात विकसित व अर्द्धविकसित, सभी देश समान रूप से न

परिभाषा

(1) प्रति व्यक्ति उत्पादन अथवा राष्ट्रीय आय में वृद्धि से सम्बन्धित →

इसके समर्थक डॉ० बैंजामिन, हिग्स, डब्लू आर्थर लुईस, एच. एफ विलियमसन तथा जैकब वाइनर हैं।
Williamson & Buttrick.

विलियमसन एवं बैट्रिक — "आर्थिक विकास अथवा वृद्धि से उस प्रक्रिया का बोध होता है जिसके द्वारा किसी देश अथवा क्षेत्र के निवासी उपलब्ध साधनों का प्रयोग प्रति व्यक्ति वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन में उत्तरोत्तर वृद्धि के लिए करते हैं।"

आर्थर लुईस
Arthur Lewis — "आर्थिक विकास का अर्थ प्रति व्यक्ति उत्पादन में वृद्धि से लगाया जाता है।"

पॉल बैरन — "आर्थिक विकास प्रति व्यक्ति भौतिक वस्तुओं के उत्पादन में निरन्तर वृद्धि है।"

प्रो० लीबेन्सटीन — "किसी अर्थव्यवस्था की प्रति व्यक्ति वस्तुएं एवं सेवाएं पैदा करने की शक्ति में वृद्धि ही आर्थिक विकास है क्योंकि इस प्रकार की वृद्धि रहन सहन के स्तर में वृद्धि की पूर्व शर्त है।"

प्रो० रोस्टोव — "आर्थिक विकास पूंजी एवं कार्यशील शक्ति में वृद्धि एवं जनसंख्या में वृद्धि के मध्य एक ऐसा सम्बन्ध है जिससे प्रति व्यक्ति उत्पादन में वृद्धि होती है।"

(2) वास्तविक राष्ट्रीय आय में वृद्धि —

इसके समर्थक मायर एवं बॉल्डविन, प्रो० कुजनेट्स, प्रो० ब्राइट फ़र्गुसन आदि हैं।

मायर एवं बॉल्डविन — "आर्थिक विकास एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें दीर्घकाल में अर्थव्यवस्था की वास्तविक राष्ट्रीय आय में वृद्धि होती है।"

Scanned by CamScanner

पेंगसन

"आर्थिक विकास का अर्थ आर्थिक उद्देश्यों को प्राप्त करने की शक्ति से लगाया जाता है।"

प्रो० ब्राइट सिंह

"आर्थिक विकास का अभिप्राय एक देश में समाज के उस परिवर्तन से है जो अर्द्धविकसित स्तर से उच्च आर्थिक स्तर की ओर जाता है।"

पॉल एल्बर्ट

"आर्थिक विकास का सम्बन्ध उस उद्देश्य से होता है जो एक देश के द्वारा अपनी वास्तविक आय बढ़ाने हेतु समस्त उत्पादक साधनों का प्रयोग करता है"

(5) सामान्य कल्याण में वृद्धि से सम्बन्धित

(1) संयुक्त राष्ट्र संघ रिपोर्ट —

"विकास मानव की भौतिक आवश्यकताओं से ही नहीं वरन् उसके जीवन की सामाजिक दशाओं की उन्नति से भी सम्बन्धित है।"

विकास का अभिप्राय केवल आर्थिक प्रगति ही नहीं है अपितु इसमें सामाजिक सांस्कृतिक, संस्थागत एवं आर्थिक परिवर्तन भी सम्मिलित है।

प्रो० ब्राइट सिंह —

"आर्थिक विकास एक बहुमुखी प्रक्रिया है इसमें केवल मौद्रिक आय की वृद्धि ही सम्मिलित नहीं है अपितु वास्तविक आदतों शिक्षा, जन स्वास्थ्य अधिक आराम तथा उन सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियों की वृद्धि भी सम्मिलित है जो एक पूर्ण और सुखी जीवन का निर्माण करती है।"

Scanned by CamScanner

एक उचित परिभाषा

"आर्थिक विकास एक सतत प्रक्रिया है जिसके अन्तर्गत कोई एक देश अपने समस्त उत्पादक साधनो का अधिकतम कुशल प्रयोग करके वास्तविक राष्ट्रीय आय और प्रति व्यक्ति आय में निरन्तर दीर्घकालीन वृद्धि करके ऊँचे स्तर की ओर बढ़ता है"

अर्थात आर्थिक विकास के परिणाम स्वरूप जीवन स्तर तथा सामान्य कल्याण में वृद्धि होती है और देश के सभी नागरिक सुखी जीवन के लिए अधिकाधिक सुविधाएं प्राप्त करते है।

आर्थिक विकास की विशेषताएं
या
लक्षण

① आर्थिक विकास एक सतत प्रक्रिया —

सतत प्रक्रिया से अभिप्राय अर्थव्यवस्था के विभिन्न अंगो में परिवर्तन से है।

A – माँग में परिवर्तन — इसमे निम्न परिवर्तन शामिल है

अ) आय स्तर एवं उसके वितरण के स्वरूप में परिवर्तन

ब) उपभोक्ताओ की रुचि मे परिवर्तन

स) जनसंख्या के आकार मे परिवर्तन

द) संगठन एवं संस्थागत परिवर्तन

B) साधनो की पूर्ति मे परिवर्तन —

① जनसंख्या में वृद्धि ② अतिरिक्त साधनो की खोज ③ पूंजी संचय मे वृद्धि ④ उत्पादन की नई तकनीक का प्रयोग ⑤ कार्य कौशल मे वृद्धि

माँग व पूर्ति एक दूसरे पर निर्भर करते है।

② वास्तविक राष्ट्रीय आय में वृद्धि —

किसी अर्थव्यवस्था मे एक वर्ष की अवधि के भीतर उत्पादित अन्तिम पदार्थों और सेवाओ के बाजार मूल्य के योग मे से ह्रास की राशि निकालकर शेष शुद्ध राष्ट्रीय उत्पादन से है।

शुद्ध राष्ट्रीय उत्पादन = कुल राष्ट्रीय उत्पादन – ह्रास व्यय

③ दीर्घकालीन एवं निरन्तर वृद्धि — आर्थिक विकास का अभिप्राय शुद्ध राष्ट्रीय आय में निरन्तर वृद्धि से है यह वृद्धि दीर्घकालीन होनी चाहिए न कि अल्पकालीन। राष्ट्रीय आय में अल्पकालीन वृद्धि आर्थिक विकास को अभिसूचक नहीं हो सकती।

④ संसाधनों का समुचित विदोहन

⑤ जीवन स्तर एवं सामान्य कल्याण में सुधार

इस प्रकार आर्थिक विकास एक दीर्घकालीन एवं सतत् प्रक्रिया है।

ओकन एवं रिचर्डसन

"यह भौतिक समृद्धि में ऐसा अनवरत दीर्घकालीन सुधार है जो वस्तुओं एवं सेवाओं के बढ़ते हुए प्रवाह में प्रतिबिम्बित होता रहता है"

प्रो० शुम्पीटर

"विकास एक निरन्तर आकस्मिक परिवर्तन है जो विस्तार की शक्ति को गति प्रदान करता है।"

आर्थिक विकास एवं आर्थिक वृद्धि

सामान्य बोलचाल की भाषा में दोनों का ही अर्थ एक समान है किन्तु व्यवहारिक दृष्टिकोण के आधार पर इन दोनों में भेद स्पष्ट किया जा सकता है अर्थात - आर्थिक वृद्धि एक स्वभाविक एवं सामान्य प्रक्रिया है जिसके लिए समाज को कोई विशेष प्रयत्न नहीं करना होता। इसके विपरीत - आर्थिक विकास के लिए विशेष ~~प्रयत्नों~~ प्रयत्नों का किया जाना जरूरी है अर्थात इसमें संरचनात्मक परिवर्तनों का होना आवश्यक है ताकि विद्यमान आर्थिक व्यवस्था को आमूल्य परिवर्तन किया जा सके।

प्रो० शुम्पीटर →

"आर्थिक वृद्धि क्रमिक प्रयत्नों का फल है तथा आर्थिक विकास केवल क्रान्तिकारी तथा सतत् परिवर्तन का परिणाम है। वृद्धि के अन्तर्गत परिवर्तन परम्परागत एवं नियमित ढंग से होते हैं जबकि विकास नवीन प्रचलित प्रक्रियाओं में सुधार करता है व सृजनात्मक शक्तियों को जन्म देता है"

श्रीमती हिक्स →

"आर्थिक वृद्धि का सम्बन्ध विकसित देशों से है जिन्हें अपने साधनों

Scanned by CamScanner

के बारे में पूर्ण ज्ञान है और उन साधनो का प्रयोग भी अधिकतम कुशलता के साथ कर रहे है, ऐसी अर्थव्यवस्था मे पूर्ण प्रतियोगिता देखने को मिलती हैं, इसके विपरित आर्थिक विकास का प्रयोग अर्द्धविकसित तथा अविकसित अर्थव्यवस्थाओ के सन्दर्भ मे किया जाता है।

श्रीमती उर्सला हिक्स — विकास का सम्बन्ध पिछड़े हुए देशो से होना चाहिए जहाँ अभी साधन प्रयोग मे नही आ सके तथा उनके प्रयोग एवं विकास की सम्भावनाएं विद्यमान है। वृद्धि शब्द का प्रयोग आर्थिक दृष्टि से विकसित राष्ट्रो के सम्बन्धो मे किया जाता है जहाँ अधिकाश साधन ज्ञात एवं विकसित होते है।

प्रो० बेन — विकास के लिए विशेष निर्देशन नियन्त्रण व मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है और यह बात अल्पविकसित देशो के सम्बन्ध मे ठीक ही बैठती है इसके विपरित आर्थिक वृद्धि का स्वभाव एक उन्नत स्वतन्त्र उपक्रम अर्थव्यवस्था का लक्षण है। ”

प्रो० किण्डलेबर्जर — “ आर्थिक वृद्धि का अर्थ केवल उत्पादन वृद्धि से है जबकि आर्थिक विकास का अर्थ — उत्पादन + प्राविधिक + संस्थागत परिवर्तन

आर्थिक संवृद्धि	आर्थिक विकास
1) आर्थिक वृद्धि विकसित देशो से सम्बन्धित है।	आर्थिक विकास विकासशील या अल्पविकसित
2) आर्थिक वृद्धि नियमित घटनाओ का परिणाम है।	सृजनात्मक व नवीन शक्तियो का परिणाम है।
3) आर्थिक वृद्धि स्थैतिक साम्य से सम्बन्धित है।	आर्थिक विकास प्रावैगिक साम्य से सम्बन्धित है।
4) आर्थिक वृद्धि का अर्थ अधिक उत्पादन से लगाया जाता है।	आर्थिक विकास का अर्थ अधिक उत्पादन, नवीन तकनीक व संस्थागत सुधार से है।
5) आर्थिक वृद्धि में स्वभाविक क्रमिक व स्थिर गति वाला परिवर्तन होता है।	आर्थिक विकास प्रेरित एवं असतत् प्रकृति का परिवर्तन होता है।

अन्त मे आर्थिक विकास एवं आर्थिक वृद्धि मे भेद करना सम्भव नहीं है इसीलिए

Scanned by CamScanner

विकास एवं वृद्धि को पर्यायवाची मानते हुए इन्हें एक ही अर्थ में प्रयोग करना चाहिए एक दूसरे के विपरित न होकर एक दूसरे के पूरक हैं

~~इस प्रकार~~

आर्थिक विकास का माप / सूचक

आर्थिक विकास आज के इस प्रगतिशील युग का एक बहुचर्चित विषय है और प्रत्येक राष्ट्र विकास की इस दौड में दूसरो से आगे निकलने के लिए निरन्तर प्रयासशील है। अतः आर्थिक विकास को मापने के लिए दो विचारधाराएं है।

① प्राचीन विचार धारा ⟶
② नवीन विचार धारा ⟶

प्राचीन विचार धारा

1) बहुमूल्य धातुओ का संग्रह — इसके समर्थक वणिकवादी थे इनके मतानुसार सोने व चाँदी में बढोत्तरी ही आर्थिक विकास की सूचक है।

2) राष्ट्रीय उत्पादन — एडम स्मिथ के अनुसार आर्थिक विकास वस्तुओ व सेवाओ के अधिक उत्पादन से सम्भव है। (एडम स्मिथ समर्थक थे)

3) समाजवाद — इसके समर्थक कार्लमार्क्स थे इनके अनुसार - अधिकतम् सामाजिक कल्याण के आधार समाजवाद व साम्यवाद की स्थापना ही आर्थिक विकास है।

4) सहकारिता — J. S. Mill ने सहकारिता की स्थापना को ही आर्थिक विकास माना है।

नवीन विचार धारा

1) वास्तविक राष्ट्रीय उत्पादन में वृद्धि —

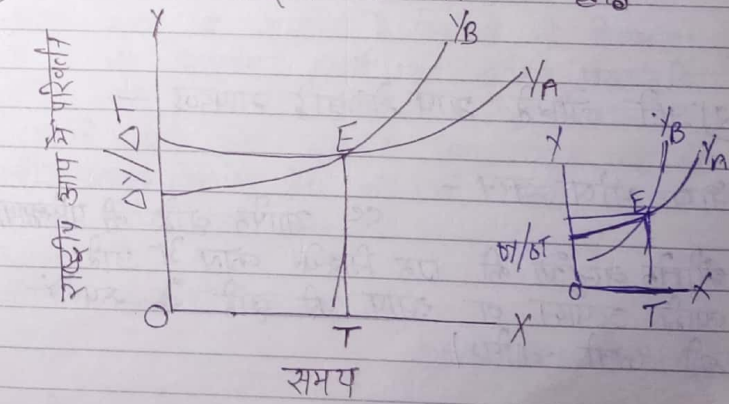

स्पष्टीकरण Y O अक्ष पर राष्ट्रीय आय ये

Scanned by CamScanner

में परिवर्तीय व OX अक्ष पर समय को दर्शाया गया है। YA रेखा देश A में राष्ट्रीय आय के स्तर को दर्शाती है व YB रेखा देश B में राष्ट्रीय आय को दर्शाती है। समय T तक देश A की राष्ट्रीय आय में वृद्धि देश B की अपेक्षा अधिक है परन्तु दीर्घकालीन परियोजनाओं के प्रारम्भ होने से देश B की राष्ट्रीय आय में तेजी से वृद्धि होती है अर्थात E सन्तुलन के पश्चात YB > YA हो जाता है।

मायर एवं बोल्डविन — "आर्थिक विकास एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक अर्थव्यवस्था की वास्तविक राष्ट्रीय आय में दीर्घकाल में वृद्धि होती है।"

2) प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि मापदण्ड —

प्रो० पीस बरन — "आर्थिक वृद्धि की परिभाषा भौतिक वस्तुओं की एक निश्चित काल में प्रति व्यक्ति उत्पादन व आय की वृद्धि के रूप में की जानी चाहिए।

③ अर्थव्यवस्था में व्यवसायिक संरचना का स्वरूप — कृषि उद्योग एवं सेवा क्षेत्र तीनों का विकास होना चाहिए।

4) आर्थिक कल्याण — आर्थिक कल्याण या जीवन स्तर में सुधार ही आर्थिक विकास है।

आय का वितरण — समान हो तभी आर्थिक विकास होता है।

आर्थिक विकास का महत्व

आर्थिक विकास मानव की समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति का एकमात्र साधन माना जाता है आर्थिक विकास ही एक ऐसी विधि है, जिससे निर्धनता, बेकारी, आय व सम्पत्ति के वितरण की विषमता, बाजार की अपूर्णता, पूँजी का अभाव, असन्तुलित विकास तथा आर्थिक पिछड़ेपन जैसी समस्त समस्याओं का उचित समाधान किया जा सकता है। और अल्प विकसित देशों का तीव्र एवं सर्वांगीण विकास किया जा सकता है।

1) राष्ट्रीय उत्पादन में वृद्धि —

Shri A. k. Dass Gupta

"यदि हम किसी प्रकार प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि की

विधि को आरम्भ कर सके तो समयावधि में प्रति व्यक्ति आय की वृद्धि के अधिकाधिक अनुपात में पूँजी निर्माण की दर में वृद्धि सम्भव की जा सकती है।"

② पूँजी निर्माण एवं विनियोग दर में वृद्धि – प्रो० लेविस –

"आर्थिक विकास के सिद्धान्त की मुख्य समस्या उस विधि के समझने से है जिससे एक समुदाय, जो पहले अपनी राष्ट्रीय आय का 4% या 5% बचत या विनियोग करता है वह उसे 12% या 15% तक परिवर्तित कर लेता है।"

डब्लू आर्थर लुईस – "आर्थिक विकास का केन्द्रीय घटक पूँजी संचय में वृद्धि (पूँजी के साथ ज्ञान एवं योग्यता को सम्मिलित करते हुए) करना है"

③ प्राकृतिक साधनों का अधिक अच्छा उपयोग –

4) ~~आर्थिक समाएं~~ व कृषि में सुधार –

5) शक्तिशाली रक्षा व्यवस्था Vasundit Rex

6) मनोरंजन के साधनों में वृद्धि Vasundit

7) उद्योगों को प्रोत्साहन

8) कार्यक्षमता में वृद्धि होना

9) प्राकृतिक विपत्तियों से सुरक्षा

10) व्यक्तियों को स्वतन्त्रता

11) मानवता की ओर झुकाव – प्रो० ईस –

"मनुष्य के आर्थिक व सामाजिक कल्याण की दृष्टि से आर्थिक सम्पन्नता आवश्यक है आर्थिक विकास के कारण शोषण एवं वैमनस्य के स्थान पर परस्पर स्नेह, सहयोग एवं सद्भावना का जन्म होता है। बीमारों, अपाहिजों व अनाथों को समाज में सुरक्षा प्रदान की जाने लगती है और इस प्रकार मानव को अधिक महत्व दिया जाने लगता है।